पपीता की लाभ दायक खेती

सी.आर.डी.ई. कृषि विज्ञान केन्द्र,
सेवनियां, जिला-सीहोर (म.प्र.)

पपीता भारत के फलों में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। यह छः माह की उम्र से फलना प्रारंभ कर देता है जो दो वर्ष तक उत्पादन देता है। पपीता व्यवसायिक खेती के साथ–साथ गृहवाटिका की शोभा भी बढ़ाता है।

जलवायु :– पपीता उत्पादन के लिये धूप व उचित तापमान आवश्यक है। पपीते का तना खोखला व पत्ती चौड़ी होने के कारण इसे पाला, लू तथा तेज हवायें अधिक नुकसान पहुंचाती है। अतः पाले व लू से बचाव के लिए आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहना चाहिए।

भूमि :– पपीते की खेती उचित जल निकास युक्त किसी भी भूमि में जिसका पी.एच.मान. 6.5 से 7.5 हो में की जा सकती है परन्तु दोमट मिट्टी पपीते की खेती के लिये अति उत्तम होती है। छायादार व जल भराव वाली मिट्टी में तना गलन रोग लगने की अधिक संभावना रहती है। अतः उचित जल निकास वाली मृदाओं का चयन इसकी खेती के लिए करें।

पपीते की मुख्य किस्में :–

- **पूसा नन्हा :–** इस किस्म के पौधे 25–30 सेमी. ऊंचाई से फलना शुरू कर देते हैं। फल मध्यम भार के व अण्डाकार होते हैं।
- **कुर्ग हनिड्यू :–** इस किस्म के फल अण्डाकार होते हैं और उन पर हल्की धारियां पाई जाती हैं।
- **रेड लेडी 786 :–** यह प्रजाति अधिक उत्पादन व रोगों से लड़ने की क्षमता वाली एवं उभयलिंगी होने के कारण सर्वाधिक लोकप्रिय है। गूदा लाल रंग का व छिलका मोटा होता है।
- **विनायक :–** यह प्रजाति मध्य क्षेत्र के लिये उपयुक्त व 8–10 माह में फलन प्रारंभ हो जाता है। फलों का वजन 1.5 से 2 किग्रा. तथा आकार गोल व बेलनाकार होता है।
- हनीडयू, बडवानी लाल, बडवानी पीला, वाशिंगटन, सूर्या आदि भी उन्नत प्रजातियां है।

पपीता पौध तैयार करना :– व्यवसायिक रूप से पपीते का प्रर्वधन बीज के द्वारा किया जाता है। पौध तैयार करने के लिये 3X1 मी. आकार की 15 सेमी ऊंची क्यारियां तैयार करनी चाहिए। बीज को 10 सेमी. के अन्तर पर पंक्तियों में 3 सेमी की दूरी तथा 1 सेमी गहराई पर बोया जाता है। एक हैक्टर में रोपण के लिए 250–300 ग्राम बीज व संकर किस्मों का 80 से 100 ग्राम बीज

पर्याप्त होता है। बीज बुवाई के तुरंत बाद फब्बारे से सिंचाई करें। पौधे 40–50 दिनों में रोपाई हेतु तैयार हो जाते है।

भूमि की तैयारी :– अप्रैल–जून माह में भूमि की 2–3 जुताई करके 1.5 फीट^3 (लम्बाईXचौड़ाईXगहराई) के आकार के गड्डे खोदकर कुछ दिनों के लिए खुले छोड़ दिये जाते हैं। इसके पश्चात गड्डे की उपरी मिट्टी में 15–20 किग्रा पकी हुई गोबर की खाद व 1 किग्रा नीम की खली प्रति गड्डें में भर देना चाहिए।

पौध रोपण :–

रोपण दूरी (मीटर में)	पौध संख्या (प्रति हैक्टेयर)
1.80X1.80	3086
2.00X2.00	2500

एक गड्डे में एक ही पौधा लगायें व पौध रोपण हेतु उपयुक्त समय जुलाई–अगस्त व फरवरी–मार्च होता है।

खाद एवं उर्वरक :– खाद तथा उर्वरक की मात्रा मिट्टी की किस्म, वर्षा, स्थान तथा पौधों की आयु पर निर्भर करती है। सामान्यतः प्रथम वर्ष में पपीते के प्रत्येक पौधे के लिये 100 ग्राम

यूरिया, 200 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट और 125 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश, की आवश्यकता होती है। सिंगल सुपर फास्फेट व म्यूरेट ऑफ पोटाश की पूरी मात्रा व 10 ग्राम यूरिया को रोपण के समय दें तथा यूरिया की 30 ग्राम मात्रा 2 माह बाद व 60 ग्राम मात्रा 4 माह बाद फूल निकलने से पहले डालना चाहिये।

सिंचाई :– नमी की कमी का पपीते की वृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। पपीते के लिए ग्रीष्म ऋतु मे 5–7 दिन तथा शीत ऋतु मे 10–15 दिन पश्चात हल्की सिंचाई करनी चाहिए।

निंदाई गुडाई :– पपीते के बगीचे को निंदाई गुडाई कर खरपतवारो से मुक्त रखना चाहिए।

अन्तरवर्तीय फसलें :– पपीते के पौधे के मध्य मे प्रथम वर्ष मे कम बढने वाली सब्जियॉ जैसे फूलगोभी,पत्तागोभी प्याज, लहसुन आदि की खेती की जा सकती है।

विरलन :– यदि पपीते में अधिक संख्या में फल लगते है,तो फलो की अच्छी बढवार नही हो पाती है। कुछ फलों का आकार बहुत छोटा व कुरूप हो जाता है तथा कुछ अपने आप गिर जाते है। अतः अधिक पास पास लगे फलों को प्रारंभिक अवस्था में तोड देना चाहिए जिससे बचे फल बड़े आकार के उच्च गुणवत्ता युक्त प्राप्त होते है।

प्रमुख कीट :–

सफेद मक्खी :– यह कीट पत्तियों का रस चूसकर हानि पहुँचाता है। तथा विषाणु रोग फैलाने में भी सहायक होता है।

प्रबंधन :– इसकी रोकथाम हेतु इमिडाक्लोरोप्रिड 17.8 एस.एल. दवा की 100–120 मिली प्रति हैक्टेयर की दर से अथवा थायोमिथाक्जॉम 25 डब्ल्यू.जी. दवा की 100 ग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से छिडकाव करना चाहिए।

लाल मकडी :– यह कीट पके फलो व पत्तियों की सतह पर पाया जाता है

इस कीट में प्रभावित पत्तियॉ पीली व फल काले रंग के हो जाते है।

प्रबंधन :– इसकी रोकथाम हेतु डायमिथोएट 30 ई.सी. 800 से 1000 मिली का प्रति हैक्टेयर की दर से घोल बनाकर छिडकाव करना चाहिए।

प्रमुख रोग :–

तना व पौध गलन :– यह रोग किसी भी उम्र के पौधो को संक्रमित कर नष्ट कर सकता है। प्रभावित पौधो की पत्तियॉ पीली पडने लगती है। और पौधा मुरझाकर गिर जाता है। तने के छिलके पर भी गीले से चकत्ते दिखाई देते है व पौधे की जडे सडने लगती है।

प्रबंधन :– बुवाई पूर्व बीजो को कार्बेन्डाजिम 2 से 3 ग्राम प्रति किलो ग्राम बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। खड़ी फसल में रोग के लक्षण दिखने पर कार्बेन्डाजिम + मेनकोजेब की 750 ग्राम मात्रा का प्रति हैक्टयर की दर से छिड़काव करें।

पत्ती कुंचन रोग :– पपीते का यह विषाणु जनित रोग है। इसमें पत्तियॉ छोटी व झुर्रीदार तथा शिराये पीली व मोटी हो जाती है। यह रोग सफेद मक्खी के द्वारा फैलता है।

प्रबंधन :– रोग ग्रसित पौधों को उखाड कर नष्ट कर देना चाहिए एवं सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोरोप्रिड दवा की 100–125 मिली मात्रा का प्रति हैक्टयर की दर से छिडकाव करना चाहिए।

पपीते का मोजेक रोग :– यह भी एक विषाणु जनित रोग है। इस रोग के कारण पत्तियों में पानीदार लम्बी चित्तियॉ पड जाती है।

प्रबंधन :– यह रोग रस चूसक कीटों के द्वारा फैलता है। अतः इस रोग की रोकथाम हेतु इमिडाक्लोरोप्रिड 17.8 एस.एल. की 100–120 मिली मात्रा या थायोमिथाक्जॉम 25 डब्ल्यू.जी. की 100 ग्राम मात्रा का प्रति हैक्टयर की दर से छिड़काव करें।

एन्थेक्नोज :– यह एक फफूँद जनित रोग है। रोग का आक्रमण तनो, पत्तियो और फलों पर होता है। फल तथा पत्तियो पर लम्बे धब्बे बन जाते है जिसके कारण फल सड जातें है व गिर जाते है।

प्रबंधन :– रोग के लक्षण दिखाई देने पर डाइथेन एम 45 अथवा कॉपर आक्सीक्लोराइड दवा की 500 ग्राम मात्रा का प्रति हैक्टर की दर से घोल बनाकर छिडकाव करना चाहियें।

फलों की तुड़ाई :– पपीते की फसल में लगभग 12–15 माह में फल तुड़ाई योग्य हो जाते है। जब फल हल्का सा पीलापन देने लगे और दूध आना बंद हो जाये तो समझना चाहिए कि फल पक गया है तब फल की तुड़ाई कर देना चाहिए।

उपज :– पपीते की उचित देखभाल होने पर प्रति वृक्ष औसतन 50–75 किग्रा. तक उपज प्राप्त हो जाती है।

-: प्रकाशक :-

सी.आर.डी.ई. कृषि विज्ञान केन्द्र, सेवनियां, जिला-सीहोर (म.प्र.)

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें

सी.आर.डी.ई. कृषि विज्ञान केन्द्र, सेवनियां, जिला–सीहोर (म.प्र.)

फोन – 07561-281834, ई.मेल crdekvksehore@gmail.com